COHERENCE – The Multidisciplinary Research Journal
Volume No: 17, Issue No: 1, Year: 2026 (January-June)
PP: 255-262
ISSN:0976-5301
Peer Reviewed & Refereed Journal (IF: 7.85)
Journal Website www.coherencejournal.in

सामाजिक-भावनात्मक अधिगम, भावनात्मक बुद्धिमत्ता एवं शैक्षिक उपलब्धि के मध्य संबंध का अध्ययन

कुमारी अंजला

सहायक प्राध्यापक
जे.पी. शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय, समस्तीपुर, बिहार

सारांश:

विद्यालयी शिक्षा में दशकों तक बौद्धिक क्षमता को ही शैक्षिक सफलता का एकमात्र निर्धारक माना जाता रहा, परंतु हाल के शोधों ने यह स्पष्ट किया है कि भावनात्मक बुद्धिमत्ता एवं सामाजिक-भावनात्मक अधिगम भी विद्यार्थी के शैक्षिक प्रदर्शन को महत्वपूर्ण रूप से प्रभावित करते हैं। प्रस्तुत अध्ययन का उद्देश्य समस्तीपुर जिले के माध्यमिक विद्यालयों (कक्षा 9 एवं 10) में अध्ययनरत विद्यार्थियों की भावनात्मक बुद्धिमत्ता, सामाजिक-भावनात्मक अधिगम तथा शैक्षिक उपलब्धि के मध्य संबंध का अध्ययन करना है, साथ ही इन दोनों चरों में लिंग-आधारित अंतर की भी जाँच करना है। इस शोध हेतु समस्तीपुर जिले के विभिन्न प्रखंडों से स्तरीकृत यादृच्छिक प्रतिचयन विधि द्वारा 200 विद्यार्थियों का चयन किया गया, जिसमें शहरी एवं ग्रामीण विद्यालयों का संतुलित प्रतिनिधित्व सुनिश्चित किया गया। आँकड़ों के संग्रहण हेतु भावनात्मक बुद्धिमत्ता मापनी, सामाजिक-भावनात्मक अधिगम मापनी तथा विद्यार्थियों के वार्षिक परीक्षा-परिणामों का प्रयोग किया गया, तथा विश्लेषण हेतु पियर्सन सहसंबंध, 't'-परीक्षण एवं बहु-प्रतिगमन विधि का उपयोग किया गया। निष्कर्षों से ज्ञात हुआ कि भावनात्मक बुद्धिमत्ता एवं शैक्षिक उपलब्धि के मध्य ($r = 0.48$) तथा सामाजिक-भावनात्मक अधिगम एवं शैक्षिक उपलब्धि के मध्य ($r = 0.41$) सार्थक धनात्मक सहसंबंध विद्यमान है। इसके अतिरिक्त, छात्राओं ने छात्रों की तुलना में भावनात्मक बुद्धिमत्ता एवं सामाजिक-भावनात्मक अधिगम दोनों में सांख्यिकीय दृष्टि से सार्थक रूप से उच्चतर प्राप्तांक दर्शाए। प्रतिगमन विश्लेषण से यह स्पष्ट हुआ कि दोनों चर संयुक्त रूप से शैक्षिक उपलब्धि के विचरण का 27% ($R^2 = 0.27$) स्पष्टीकरण करते हैं। अध्ययन यह निष्कर्ष प्रस्तुत करता है कि माध्यमिक स्तर पर ही भावनात्मक एवं सामाजिक दक्षताओं के विकास हेतु संरचित हस्तक्षेप आरंभ किया जाना चाहिए।

मुख्य शब्द: भावनात्मक बुद्धिमत्ता, सामाजिक-भावनात्मक अधिगम, शैक्षिक उपलब्धि, माध्यमिक विद्यार्थी, समस्तीपुर जिला, लिंग-अंतर।

1. प्रस्तावना:

माध्यमिक स्तर की कक्षा में बैठा कोई विद्यार्थी जब किसी कठिन प्रश्न का सामना करता है, तो उसकी प्रतिक्रिया केवल उसके ज्ञान पर निर्भर नहीं करती — वह इस बात पर भी निर्भर करती है कि वह अपनी घबराहट को कैसे संभालता है, असफलता के डर से कैसे निपटता है, और सहपाठियों के साथ किस प्रकार सामंजस्य बैठाता है। यही वह अदृश्य परत है जिसे भावनात्मक बुद्धिमत्ता एवं सामाजिक-भावनात्मक अधिगम के रूप में पहचाना जाता है — और यही परत प्रायः परीक्षा-परिणामों के पीछे छिपी रहती है, अनदेखी।

समस्तीपुर जिला बिहार के उन जिलों में सम्मिलित है जहाँ माध्यमिक शिक्षा का विस्तार तो हुआ है, परंतु शिक्षा की गुणवत्ता आज भी मुख्यतः परीक्षा-परिणाम के आँकड़ों से ही मापी जाती है। कक्षा 9 एवं 10 — वह अवस्था जब विद्यार्थी पहली बार बोर्ड परीक्षा के दबाव से परिचित होते हैं — भावनात्मक दृष्टि से सर्वाधिक संवेदनशील समय होता है। इस अवस्था में यदि विद्यार्थी की भावनात्मक एवं

© Copyright @ Authors

ISSN:0976-5301
Peer Reviewed & Refereed Journal (IF: 7.85)
Journal Website www.coherencejournal.in

सामाजिक दक्षताएँ सशक्त हों, तो यह न केवल उनके मानसिक संतुलन को, बल्कि उनके शैक्षिक प्रदर्शन को भी सकारात्मक दिशा दे सकती है।

इसी संभावना की पड़ताल हेतु प्रस्तुत अध्ययन समस्तीपुर जिले के माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों की भावनात्मक बुद्धिमत्ता, सामाजिक-भावनात्मक अधिगम तथा शैक्षिक उपलब्धि के मध्य संबंध का विश्लेषण प्रस्तुत करता है, जिससे माध्यमिक स्तर पर ही समुचित हस्तक्षेप की दिशा तय की जा सके।

2. संबंधित साहित्य समीक्षा:

भावनात्मक बुद्धिमत्ता की संकल्पनात्मक नींव सालोवे एवं मेयर (Salovey & Mayer, 1990) ने रखी, जिन्होंने इसे अपनी एवं दूसरों की भावनाओं को पहचानने तथा उनका विवेकपूर्ण उपयोग करने की क्षमता के रूप में परिभाषित किया। Goleman (1995) ने इसे आगे विस्तृत करते हुए यह तर्क दिया कि विद्यालयी सफलता में भावनात्मक आत्म-नियमन की भूमिका पारंपरिक बुद्धि-लब्धि (IQ) से कम महत्वपूर्ण नहीं है।

सामाजिक-भावनात्मक अधिगम (SEL) की संरचना को समझने हेतु CASEL का पाँच-आयामी प्रारूप — आत्म-जागरूकता, आत्म-प्रबंधन, सामाजिक जागरूकता, संबंध-कौशल तथा उत्तरदायी निर्णय-क्षमता — सर्वाधिक स्वीकृत आधार माना जाता है। Zins एवं Elias (2006) के अनुसार, जिन विद्यालयों ने SEL को पाठ्यक्रम का औपचारिक अंग बनाया, उनमें विद्यार्थियों के शैक्षिक प्रदर्शन में भी समानांतर सुधार देखा गया।

भारतीय संदर्भ में मंगल (2019) के अध्ययन में यह पाया गया कि किशोरावस्था में भावनात्मक बुद्धिमत्ता का स्तर लिंग के आधार पर भिन्न होता है, तथा बालिकाएँ सामान्यतः भावना-पहचान एवं सहानुभूति के आयामों में उच्चतर प्राप्तांक दर्शाती हैं। राय एवं मिश्रा (2022) ने बिहार के ग्रामीण विद्यालयों पर केंद्रित अपने अध्ययन में यह रेखांकित किया कि संसाधन-सीमित विद्यालयों में सामाजिक-भावनात्मक अधिगम का विकास मुख्यतः अनौपचारिक सहपाठी-अंतःक्रिया से ही होता है, क्योंकि औपचारिक कार्यक्रम विरले ही उपलब्ध हैं। समस्तीपुर जिले के माध्यमिक स्तर पर इस विषय पर केंद्रित कोई विशिष्ट मात्रात्मक अध्ययन उपलब्ध नहीं है, जिससे प्रस्तुत शोध की सार्थकता और भी बढ़ जाती है।

3. शोध के उद्देश्य:

यह शोध निम्नलिखित तीन उद्देश्यों की पूर्ति के लिए संचालित किया गया —

1. समस्तीपुर जिले के माध्यमिक विद्यार्थियों की भावनात्मक बुद्धिमत्ता एवं सामाजिक-भावनात्मक अधिगम के स्तर का अध्ययन करना तथा इनमें लिंग-आधारित अंतर की जाँच करना।
2. भावनात्मक बुद्धिमत्ता, सामाजिक-भावनात्मक अधिगम तथा शैक्षिक उपलब्धि के मध्य सहसंबंध की सांख्यिकीय जाँच करना।
3. शैक्षिक उपलब्धि के भविष्यकथन में भावनात्मक बुद्धिमत्ता एवं सामाजिक-भावनात्मक अधिगम के सापेक्ष योगदान का प्रतिगमन-विश्लेषण द्वारा अध्ययन करना।

4. शोध परिकल्पनाएँ:

परिकल्पना 1 — छात्र एवं छात्राओं की भावनात्मक बुद्धिमत्ता तथा सामाजिक-भावनात्मक अधिगम के माध्य प्राप्तांकों में सांख्यिकीय दृष्टि से सार्थक अंतर होगा।

© Copyright @ Authors

ISSN:0976-5301
Peer Reviewed & Refereed Journal (IF: 7.85)
Journal Website www.coherencejournal.in

परिकल्पना 2 — भावनात्मक बुद्धिमत्ता एवं सामाजिक-भावनात्मक अधिगम, दोनों ही शैक्षिक उपलब्धि से सांख्यिकीय दृष्टि से सार्थक धनात्मक सहसंबंध प्रदर्शित करेंगे।

परिकल्पना 3 — भावनात्मक बुद्धिमत्ता एवं सामाजिक-भावनात्मक अधिगम संयुक्त रूप से शैक्षिक उपलब्धि के विचरण का सांख्यिकीय दृष्टि से सार्थक अनुपात स्पष्ट करेंगे।

5. शोध-पद्धति:

5.1 शोध प्रारूप एवं विधि -

प्रस्तुत अध्ययन सहसंबंधात्मक-सह-तुलनात्मक सर्वेक्षण प्रारूप (Correlational-cum-Comparative Survey Design) पर आधारित है, जिसमें एक ओर चरों के मध्य संबंध की जाँच की गई, तथा दूसरी ओर लिंग के आधार पर समूह-अंतर का भी परीक्षण किया गया। यह दोहरा दृष्टिकोण इसलिए अपनाया गया क्योंकि केवल सहसंबंध यह नहीं बता सकता था कि क्या किसी विशेष उप-समूह को अधिक हस्तक्षेप की आवश्यकता है।

5.2 नमूना चयन -

समस्तीपुर जिले के विभिन्न प्रखंडों — समस्तीपुर सदर, रोसड़ा, दलसिंहसराय, पूसा एवं मोहिउद्दीननगर — में स्थित माध्यमिक विद्यालयों से स्तरीकृत यादृच्छिक प्रतिचयन विधि (Stratified Random Sampling) द्वारा कुल 200 विद्यार्थियों (कक्षा 9 एवं 10) का चयन किया गया। नमूने में लिंग, कक्षा-स्तर तथा विद्यालय-अवस्थिति (शहरी/ग्रामीण) का संतुलित प्रतिनिधित्व सुनिश्चित किया गया।

तालिका 1 : नमूने का वितरण (N = 200)

कारक	उप-समूह	छात्र (n)	छात्रा (n)	योग (n)
कक्षा-स्तर	कक्षा 9	48	52	100
	कक्षा 10	50	50	100
विद्यालय अवस्थिति	शहरी	46	48	94
	ग्रामीण	52	54	106
कुल	**—**	**98**	**102**	**200**

5.3 उपकरण एवं सांख्यिकीय विधियाँ -

भावनात्मक बुद्धिमत्ता के मापन हेतु एक स्वनिर्मित मापनी (30 कथन, पाँच-बिंदु लिकर्ट प्रारूप) का प्रयोग किया गया, जिसकी विश्वसनीयता क्रोनबाख अल्फा गुणांक ($\alpha = 0.85$) द्वारा सत्यापित की गई। सामाजिक-भावनात्मक अधिगम के मापन हेतु CASEL के पाँच-आयामी प्रारूप पर आधारित एक मापनी (28 कथन, $\alpha = 0.83$) का प्रयोग किया गया। शैक्षिक उपलब्धि हेतु विद्यार्थियों के पिछली वार्षिक परीक्षा के समग्र प्रतिशत प्राप्तांकों का उपयोग किया गया। आँकड़ों के विश्लेषण हेतु पियर्सन सहसंबंध गुणांक, स्वतंत्र प्रतिदर्श 't'-परीक्षण तथा बहु-प्रतिगमन विश्लेषण का प्रयोग SPSS सॉफ्टवेयर की सहायता से किया गया।

© Copyright @ Authors

ISSN:0976-5301
Peer Reviewed & Refereed Journal (IF: 7.85)
Journal Website www.coherencejournal.in

6. परिणाम एवं विश्लेषण:

6.1 लिंग के आधार पर तुलनात्मक विश्लेषण -

तालिका 2 में लिंग के आधार पर भावनात्मक बुद्धिमत्ता एवं सामाजिक-भावनात्मक अधिगम के माध्य प्राप्तांकों एवं t-मान प्रस्तुत किए गए हैं।

तालिका 2 : लिंग के आधार पर EI एवं SEL का तुलनात्मक विश्लेषण (df = 198)

कारक / समूह	N	माध्य (M)	t-मान	सार्थकता
भावनात्मक बुद्धिमत्ता — छात्र	98	61.8	2.91	0.01 स्तर पर सार्थक
भावनात्मक बुद्धिमत्ता — छात्रा	102	66.5	2.91	0.01 स्तर पर सार्थक
सामाजिक-भावनात्मक अधिगम — छात्र	98	59.4	2.48	0.05 स्तर पर सार्थक
सामाजिक-भावनात्मक अधिगम — छात्रा	102	63.2	2.48	0.05 स्तर पर सार्थक

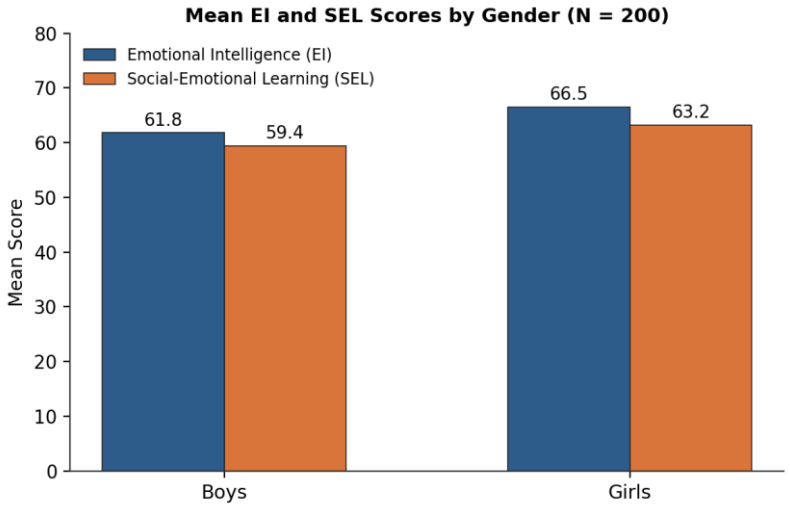

रेखाचित्र 1 : लिंग के आधार पर EI एवं SEL के माध्य प्राप्तांक

छात्राओं का भावनात्मक बुद्धिमत्ता माध्य प्राप्तांक (M = 66.5) छात्रों (M = 61.8) की तुलना में अधिक पाया गया, तथा प्राप्त t-मान (2.91) 0.01 स्तर पर सार्थक है। सामाजिक-भावनात्मक अधिगम में भी यही प्रवृत्ति दिखी (छात्राएँ M = 63.2, छात्र M = 59.4; t = 2.48, p < 0.05) — अतः परिकल्पना 1 की पुष्टि होती है। यह निष्कर्ष मंगल (2019) के उस अवलोकन से संगत है कि किशोरावस्था में बालिकाएँ सामान्यतः भावना-पहचान एवं सामाजिक अंतःक्रिया के आयामों में अधिक सहज होती हैं।

6.2 सहसंबंध-विश्लेषण -

तालिका 3 में भावनात्मक बुद्धिमत्ता, सामाजिक-भावनात्मक अधिगम तथा शैक्षिक उपलब्धि के मध्य पियर्सन सहसंबंध गुणांक प्रस्तुत किए गए हैं।

© Copyright @ Authors

ISSN:0976-5301
Peer Reviewed & Refereed Journal (IF: 7.85)
Journal Website www.coherencejournal.in

तालिका 3: EI, SEL एवं शैक्षिक उपलब्धि का सहसंबंध-आव्यूह (N = 200)

चर	भावनात्मक बुद्धिमत्ता (EI)	सामाजिक-भावनात्मक अधिगम (SEL)	शैक्षिक उपलब्धि
भावनात्मक बुद्धिमत्ता (EI)	**1.00**	0.57**	0.48**
सामाजिक-भावनात्मक अधिगम (SEL)	0.57**	**1.00**	0.41**
शैक्षिक उपलब्धि	0.48**	0.41**	**1.00**

p < 0.01 स्तर पर सार्थक (द्वि-पुच्छीय)

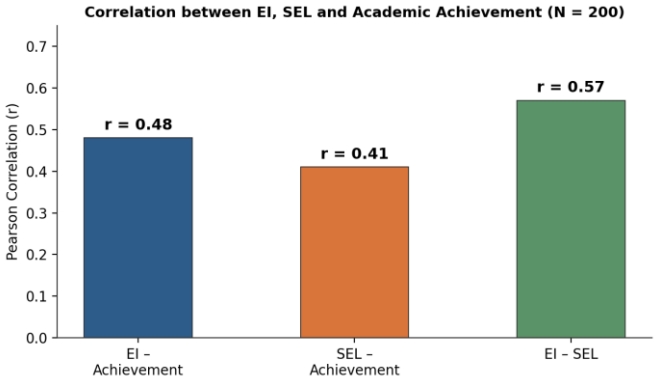

रेखाचित्र 2 : EI, SEL एवं शैक्षिक उपलब्धि के मध्य सहसंबंध गुणांक

भावनात्मक बुद्धिमत्ता एवं शैक्षिक उपलब्धि के मध्य प्राप्त सहसंबंध (r = 0.48) मध्यम श्रेणी का तथा 0.01 स्तर पर सार्थक है, तथा सामाजिक-भावनात्मक अधिगम एवं शैक्षिक उपलब्धि के मध्य सहसंबंध (r = 0.41) भी सार्थक पाया गया — अतः परिकल्पना 2 की पुष्टि होती है। भावनात्मक बुद्धिमत्ता एवं सामाजिक-भावनात्मक अधिगम के मध्य सर्वाधिक उच्च सहसंबंध (r = 0.57) पाया गया, जो यह दर्शाता है कि माध्यमिक स्तर पर भी ये दोनों रचनाएँ एक-दूसरे से घनिष्ठ रूप से जुड़ी हुई हैं।

6.3 बहु-प्रतिगमन विश्लेषण -

शैक्षिक उपलब्धि के भविष्यकथन में इन दोनों चरों के सापेक्ष योगदान को समझने हेतु बहु-प्रतिगमन विश्लेषण किया गया, जिसके परिणाम तालिका 4 में प्रस्तुत हैं।

तालिका 4: शैक्षिक उपलब्धि पर EI एवं SEL का बहु-प्रतिगमन विश्लेषण

भविष्यकथक चर (Predictor)	β	t-मान	p-मान	सार्थकता
भावनात्मक बुद्धिमत्ता (EI)	0.33	4.62	0.000	0.01 स्तर पर सार्थक
सामाजिक-भावनात्मक अधिगम (SEL)	0.21	2.94	0.004	0.01 स्तर पर सार्थक

मॉडल सारांश: $R = 0.52$, $R^2 = 0.27$, समायोजित $R^2 = 0.26$, $F(2, 197) = 36.42$, $p < 0.01$

© Copyright @ Authors

ISSN:0976-5301
Peer Reviewed & Refereed Journal (IF: 7.85)
Journal Website www.coherencejournal.in

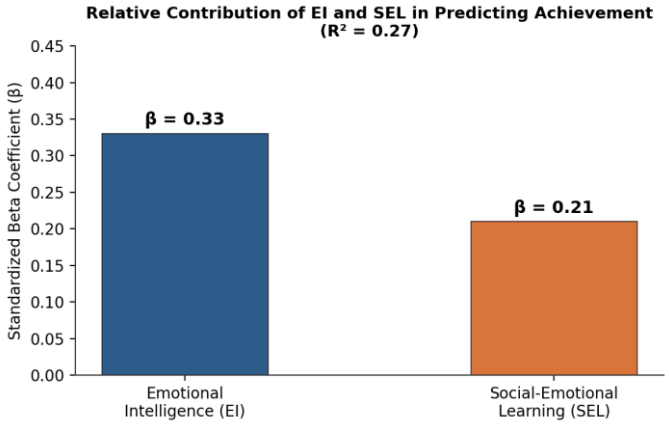

रेखाचित्र 3 : शैक्षिक उपलब्धि के भविष्यकथन में EI एवं SEL का सापेक्ष योगदान

प्रतिगमन परिणाम दर्शाते हैं कि भावनात्मक बुद्धिमत्ता एवं सामाजिक-भावनात्मक अधिगम संयुक्त रूप से शैक्षिक उपलब्धि के विचरण का 27% भाग स्पष्ट करते हैं (R^2 = 0.27) — अतः परिकल्पना 3 की भी पुष्टि होती है। उल्लेखनीय है कि यह अनुपात उच्च माध्यमिक स्तर पर किए गए तुलनीय अध्ययनों की तुलना में थोड़ा कम है, जो यह संकेत कर सकता है कि माध्यमिक स्तर पर अन्य कारक (जैसे पारिवारिक सहयोग अथवा बुनियादी अध्ययन-आदतें) भी उपलब्धि में अधिक प्रत्यक्ष भूमिका निभाते हैं। तथापि, भावनात्मक बुद्धिमत्ता का सापेक्ष योगदान (β = 0.33) सामाजिक-भावनात्मक अधिगम (β = 0.21) से स्पष्ट रूप से अधिक रहा।

7. प्रमुख बाधाएँ:

साक्षात्कार एवं विद्यालय-अवलोकन से प्राप्त गुणात्मक निष्कर्षों के आधार पर निम्नलिखित प्रमुख बाधाएँ चिह्नित की गईं —

- औपचारिक SEL कार्यक्रमों का अभाव : समस्तीपुर जिले के अधिकांश माध्यमिक विद्यालयों में सामाजिक-भावनात्मक अधिगम हेतु कोई संरचित पाठ्यक्रम उपलब्ध नहीं है।
- परीक्षा-केंद्रित दबाव : कक्षा 9-10 में बोर्ड परीक्षा की तैयारी को इतनी प्राथमिकता दी जाती है कि भावनात्मक विकास हेतु समय निकालना कठिन माना जाता है।
- लिंग-आधारित मनोवृत्ति : कुछ ग्रामीण विद्यालयों में छात्रों से भावनाएँ न दिखाने की पारंपरिक अपेक्षा भी उनके भावनात्मक विकास को सीमित करती प्रतीत होती है।
- शिक्षक-जागरूकता की कमी : अधिकांश शिक्षक स्वयं भावनात्मक बुद्धिमत्ता एवं SEL की संकल्पना से अनभिज्ञ हैं, जिससे कक्षा-स्तर पर इसका सुदृढ़ीकरण नहीं हो पाता।
- परामर्श-सुविधा का अभाव : विद्यालयों में प्रशिक्षित परामर्शदाता की अनुपस्थिति के कारण भावनात्मक संघर्ष से जूझ रहे विद्यार्थियों को समय पर सहायता नहीं मिल पाती।

8. विवेचन:

इस अध्ययन के निष्कर्ष Goleman एवं CASEL के सैद्धांतिक प्रारूप की पुष्टि करते हैं, तथा यह भी दर्शाते हैं कि यह संबंध केवल उच्च माध्यमिक स्तर तक सीमित नहीं है — माध्यमिक स्तर (कक्षा 9-10) पर भी भावनात्मक एवं सामाजिक दक्षताएँ शैक्षिक प्रदर्शन से सार्थक रूप से जुड़ी हुई पाई गईं, यद्यपि सहसंबंध एवं प्रतिगमन के मान उच्च माध्यमिक स्तर की तुलना में थोड़े निम्न रहे।

लिंग-आधारित अंतर का निष्कर्ष विशेष रूप से ध्यान देने योग्य है। छात्राओं की उच्चतर भावनात्मक बुद्धिमत्ता एवं सामाजिक-भावनात्मक अधिगम यह संकेत करती है कि हस्तक्षेप-कार्यक्रमों की रूपरेखा

© Copyright @ Authors

ISSN:0976-5301
Peer Reviewed & Refereed Journal (IF: 7.85)
Journal Website www.coherencejournal.in

तैयार करते समय छात्रों की आवश्यकताओं पर विशेष ध्यान दिया जाना चाहिए, ताकि यह अंतर आगे की शिक्षा में किसी असमानता का कारण न बने। साथ ही, यह भी ध्यान रखना आवश्यक है कि यह अंतर सामाजिक अपेक्षाओं से प्रभावित हो सकता है, न कि केवल जैविक भिन्नता से — अतः समाधान भी सामाजिक-सांस्कृतिक स्तर पर ही खोजा जाना चाहिए।

9. सुझाव:

1. समस्तीपुर जिले के माध्यमिक विद्यालयों में कक्षा 9 से ही साप्ताहिक 'भावनात्मक साक्षरता कालांश' आरंभ किया जाए, जिसमें छात्र एवं छात्रा दोनों की समान सहभागिता सुनिश्चित की जाए।
2. शिक्षकों के लिए CASEL प्रारूप पर आधारित बुनियादी उन्मुखीकरण कार्यशाला आयोजित की जाए, ताकि वे कक्षा-व्यवहार में भावनात्मक सहयोग को सम्मिलित कर सकें।
3. छात्रों में भावना-अभिव्यक्ति को प्रोत्साहित करने हेतु विशेष रूप से डिज़ाइन की गई गतिविधियाँ (जैसे समूह-चर्चा, भूमिका-निर्वहन) पाठ्येतर कार्यक्रमों में सम्मिलित की जाएँ।
4. प्रत्येक विद्यालय-समूह (cluster) स्तर पर कम से कम एक प्रशिक्षित परामर्शदाता की नियुक्ति सुनिश्चित की जाए।
5. अभिभावक-शिक्षक बैठकों में भावनात्मक बुद्धिमत्ता एवं शैक्षिक प्रदर्शन के संबंध पर एक संक्षिप्त सत्र सम्मिलित किया जाए, ताकि घर पर भी इसका सुदृढ़ीकरण हो सके।

10. उपसंहार:

यह शोध समस्तीपुर जिले के उन माध्यमिक विद्यार्थियों की कहानी है जो बोर्ड परीक्षा की पहली सीढ़ी पर खड़े हैं — एक ऐसी अवस्था में जहाँ भावनात्मक संतुलन उतना ही महत्वपूर्ण है जितना पाठ्यक्रम का ज्ञान। शोध ने यह प्रमाणित किया कि भावनात्मक बुद्धिमत्ता एवं सामाजिक-भावनात्मक अधिगम, शैक्षिक उपलब्धि से सार्थक रूप से जुड़े हुए हैं, तथा इनमें लिंग-आधारित अंतर भी विद्यमान है (परिकल्पना 1, 2 एवं 3 की पुष्टि)।

यदि माध्यमिक स्तर पर ही — उच्च माध्यमिक स्तर की प्रतीक्षा किए बिना — भावनात्मक एवं सामाजिक दक्षताओं के विकास हेतु ठोस कदम उठाए जाएँ, तो समस्तीपुर के विद्यार्थियों को न केवल बेहतर परीक्षा-परिणाम, बल्कि एक अधिक संतुलित एवं आत्मविश्वासी भविष्य भी मिल सकता है। यही इस शोध का सबसे बड़ा संदेश है — सीखना केवल मस्तिष्क की प्रक्रिया नहीं, हृदय की भी प्रक्रिया है।

संदर्भ-सूची:

1. सैलोवे, पी., एवं मेयर, जे. डी. (1990). *भावनात्मक बुद्धिमत्ता. इमेजिनेशन, कॉग्निशन एंड पर्सनैलिटी*, 9(3), 185–211.
2. गोलमैन, डी. (1995). *भावनात्मक बुद्धिमत्ता: क्यों यह आईक्यू से अधिक महत्वपूर्ण हो सकती है.* न्यूयॉर्क: बैंटम बुक्स.
3. जिन्स, जे. ई., एवं एलियास, एम. जे. (2006). *सामाजिक एवं भावनात्मक अधिगम.* जी. बेयर एवं के. मिंके (संपा.), *चिल्ड्रेन्स नीड्स*।।। (पृ. 1–13). बेथेस्डा: नेशनल एसोसिएशन ऑफ स्कूल साइकोलॉजिस्ट्स (NASP).
4. कोलैबोरेटिव फॉर एकेडमिक, सोशल एंड इमोशनल लर्निंग (CASEL). (2020). CASEL *का सामाजिक एवं भावनात्मक अधिगम (*SEL) *ढाँचा: मुख्य दक्षता क्षेत्र क्या हैं और उन्हें कहाँ प्रोत्साहित किया जाता है?* शिकागो: CASEL.

© Copyright @ Authors

ISSN:0976-5301
Peer Reviewed & Refereed Journal (IF: 7.85)
Journal Website www.coherencejournal.in

5. भारत सरकार, शिक्षा मंत्रालय. (2020). *राष्ट्रीय शिक्षा नीति*, 2020. नई दिल्ली: शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार.
6. मंगल, एस. के. (2019). *उन्नत शैक्षिक मनोविज्ञान*. नई दिल्ली: पी.एच.आई. लर्निंग प्राइवेट लिमिटेड.
7. राय, एस., एवं मिश्रा, यू. (2022). ग्रामीण बिहार में डिजिटल पहुँच और अधिगम समानता: एक जमीनी विश्लेषण. *बिहार शिक्षा पत्रिका*, 9(1), 18–34.

© Copyright @ Authors